"वेशया अथवा रंडी या कंजर"

"अंत काल जो लछमी सिमरै ऐसी चिन्ता मह जे मरै। "सरप जोन" (जून) वल वल उतरै।"

"अन्त काल जो स्त्री सिमरै ऐसी चिन्ता मह जे मरै। "बेसवा" जोन वल वल उतरै।"

"अन्त काल जो लड़का सिमरै ऐसी चिन्ता मह जे मरै। "सूकर" जोन वल वल उतरै।"

"अन्त काल जो मन्दर सिमरै ऐसी चिन्ता मह जे मरै। "प्रेत" जोन वल वल उतरै।"

"अन्त काल नारायण सिमरै ऐसी चिन्ता मह जे मरै-बदत त्रिलोचन ते नर मुकता पीताम्बर वा के हृदय बसै ।"

अन्त काल अर्थात आखिरी समय । यहाँ पर अन्त काल का भाव जब जीव के प्राण निकलने लगते हैं वह कदापि नहीं है सुपने में भी । ये केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" की एक गहरी चाल है । यानी सारी उम्र तो ये ताकतें रंग-तमाशे-नाचने-कूदने में ही बड़ी चालाकी से आप को व्यस्त करवाये रखेंगी और तरह-2 के विशेष-2 जुर्माने इन विशेष-2 क्रियाओं के निश्चित कर लेंगी और आखिरी समय के लिये प्रचारित कर देंगी कि बस एक बार नारायण को पुकार लेना फिर सब जुर्माने अथवा भुगतान "हवा" हो जायेंगे और आप को नानक नाम के "विशेष परमात्मा" के चरणों में अनन्त काल के लिये जगह मिल ही जायेगी । चरण न हुऐ कोई बहुत बड़ा "प्लैनेट विशेष" ही हो गया है शायद आप की नजर विशेष में । भाई किसी मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ से आप अपने ये "दुर्लभ चक्षु" अवश्य आवश्यक रूप से जरूर याद से मुआयना करवा लीजियेगा । हमें तो कुछ काला-2-सफेद-2 सा विशेष लगता है इन प्यारी-2 झील से भी गहरे समुंद्रों में । कहीं ऐसा न हो कि कोई बड़ी चालाकी से अपना कार्य पहले कर जाये और वहाँ आप को अपने इस "दुर्लभ विशेष आविष्कार" किये गये "प्लैनेट विशेष" पर इस दुर्लभ नजर में आये अभाव के कारण कुछ धोखा खाना पड़े । भला आप इन

दुर्लभ विशेष परमात्मा के दुर्लभ चरणों को पहचानोगें ही कैसे ? समस्या गम्भीर है भाई कुछ ले दे करके अवश्य गोल-2 बड़ा-2 सा चमकने वाला चश्मा चढ़वा लो अगर "सर्जरी विशेष" करवाने से आप को कुछ भयानक सा भय अनुभव लगता है तो । एक तो आप की इस दुर्लभ सूरत को चार नहीं तो दो "पूर्णमासी वाले चाँद" लग ही जायेंगे तथा इंटरेस्ट के रूप में अवश्य भाई आप की इस दुर्लभ खूबसूरत तस्वीर को किसी की मैली अथवा काली सी नजर लगने का भय अथवा डर भी खत्म हो ही जायेगा अवश्य । परमात्मा ऐसी भयानक बिना सूर्य के चमकने वाली कीमती दुर्लभ बुद्धि सब "विशेषो" को देवे । तो भाई हम तो ये चाँद बनाने अथवा लगाने का धंधा ही शुरू कर देवेंगे । खूब चलेगा । अपनी चली आ रही पुश्तैनी गरीबी तो भाई निश्चित ही है कि कुछ ही दिनों में रफूचक्कर हो ही जायेगी अवश्य ही आवश्यक रूप से । बेचारा नानक ! बिना ये नजर दुरूस्त करवाये कैसे पहचान जायेगा ? चारों तरफ धोखा ही धोखा हो रहा है लम्बे समय से । सावधान विशेष-इस धोखे से अपने को बचाने के लिये अवश्य अपनी दुर्लभ तस्वीर को दो नहीं तो एक चाँद तो अवश्य ही लगवा ही लो । अग्रिम की कोई आवश्यकता ही नहीं है शेष आसान किश्तों में उपलब्ध है । शीघ्र कीजिये कहीं स्टाक खत्म न हो जाये, आप के इस दुर्लभ खजाने तक पहुँचने से पहले ही कहीं आप को निराश न होना पड़े । ये विशेष उपलब्धी धुर विशेष से उतर कर के आई

है केवल आपकि ही सेवा हेतू । जल्दी कीजिये कहीं कोई दूसरा आप से पहले इस "दुर्लभ प्लैनेट" पर पहुँच करके कोई बड़ा "प्लाट विशेष" सस्ते दामों पर कहीं हाथ न मार लेवे । केवल देर से पहुँचने के कारण ही आप को कहीं जिन्दगी भर रोना ही हाथ पल्ले शेष रह जाये ।

"सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" ने निश्चित रूप से प्रचारित कर रखा है कि आखिरी समय आप काशी में प्राण त्यागोगे तो अवश्य भगवान शिव आप के दायें कान में नाम फूँक मार देगें और आप को सिर पर चढ़ा कर सीधे अपने धाम बैकुण्ठ पहुँच कर के ही दम लेवेगें । इससे पहले रुकने का कोई प्रयोजन अथवा साहस ही नहीं है इस विशेष परमात्मा जी का । इन कपोल कल्पित घटनाओं का लाभ केवल इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के सिवाय और किसे सुपने में भी प्राप्त होना संभव हो सकता है । बहुत से पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी इन्हें सच मान कर के जिन्दगी भर अपनी हस्ती इन "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के खाते में ही तबदील करते रहते हैं और मरते समय अपनी मुक्ति का सुपना साकार करने के लिये काशी में डेरा डाल देते हैं । काशी को भगवान शिव की रहने की विशेष नगरी प्रचारित किया गया है । इस नगरी को भगवान नें अपने त्रिशूल पर स्थापित कर रखा है । प्रचारित करने वालों को दुनिया को ठगने का इससे

बढ़िया धन्धा भला और कहाँ मिलेगा ? ठगने वाला चाहिये ठगवाने को हम जैसे अवश्य इकट्ठे हो ही जाते हैं मुंडवाने के लिये । सृष्टि के नियमों को न विचारने के कारण ही ऐसा होता है । सरकार का काम है नियम बनाना तथा उसे प्रचारित करना । प्रजा का धर्म है कि नियम को जाने तथा उस नियम-मर्यादा के अनुसार अपने को अनुशासित करे अथवा रखे । नियम-मर्यादा उल्लंघन करने का जुर्माना अवश्य भुगतना ही पड़ता है । केवल यह ब्यान कर देने से ही आप इस जुर्माने के कभी सुपने में भी अपने को अलग नहीं कर सकते अथवा बचा सकते कि आप को किसी नियम विशेष की जानकारी ही नहीं थी । आप मनुष्य नाम के दुर्लभ जन्म में आये हो, आपको इस जन्म को सार्थक बनाने के लिये अति आवश्यक नियम-मर्यादाओं की जानकारी होनी ही चाहिये आवश्यक रूप से । आप बच्चे को शिक्षित करने के लिये स्कूल कालेज इत्यादि के बारे में समस्त जानकारी कैसे एकत्र करने में समर्थ हो जाते हैं ? अभाव में होने पर भी कैसे फीस भर देते हो ? कैसे-2 अनन्त विघ्नों से लड़ाई लड़ते हो केवल अपने मकसद को प्रत्यक्ष करने के लिये । जैसे ये लड़ाई लड़ते हो वैसे ही अपनी इस "दुर्लभ हस्ती" के कल्याण हेतू भी जानकारी अथवा नियमों को जानो और उनके अनुसार अपनी व्यवहारिक ज़िन्दगी जी करके "परमात्मा की विशेष दया" से उपलब्ध ये "दुर्लभ अवसर" मानव जन्म को भी सार्थक अथवा सफल बनाओ । भीड़

को देख करके केवल उसका हिस्सा बनने के लिये लाईन में मत लग जाओ । आप नहीं जानते अधिकतर ये लाईनें केवल अंधे कुँएं में ही डूबती जा रही हैं । आप में से ज्यादातर की कई पीढ़ियाँ इन लाईनों में लग कर के ही केवल सदा के लिये अपने को इस निकृष्ट जेल खाने का हिस्सा बना चुकी हैं । आप को प्रभु ने बुद्धि दी है खूब सोच-विचार करो अपने को कहीं भी प्रस्तुत करने से पहले । ऐसा न हो कि कहीं बाद में आपको पछताना ही पड़े केवल । इन लाईनों अथवा भीड़ में सच्चाई की केवल एक ही पहचान है "नियम-शास्त्र ।" जहाँ ये पढ़ाई मिले केवल उसी स्कूल का आप विचार करिये । जहाँ शक्लें दिखा कर अथवा मत्थे टिकवा कर ही केवल मुक्ति बाँटी जाती है, समझ लो कि भाई यहाँ अवश्य लुटिया डूबेगी ही निश्चित रूप से शीघ्र ही ! नियम शास्त्र को केवल वही पढ़ा सकेगा अथवा बता सकेगा जो स्वंय पढ़ा होगा अर्थात स्वयं जीते जी मरा होगा । शेष सब दूसरों की थाली में जुगाली भरने वाले एक जंगली जानवर से अधिक कुछ भी ज्ञान अथवा जानकारी कभी सुपने में भी आप को देने में समर्थ न हो सकेंगे । अगर कुछ बचता और दिखता है तो केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का बहुत चालाकियों से भरा हुआ "सुन्दर सा महीन जाल ।" ये जाल बाहर से बहुत मीठा रसदार तथा नकली चमक लिये हुऐ है । इस के धोखे में कहीं हस्ती सदा के लिये इस भयावले अन्धे कुँएं में मत डुबो बैठना, ये नकली चमक

के सिद्धियाँ हैं जो शब्द का विकृत स्वरूप केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" ही हैं । जैसे वचन सिद्धि अथवा जो संभव न लगे उसे प्रत्यक्ष कर दिखाना अथवा हृदय की बात बता देना इत्यादि । यह केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का सदा के लिये आप के गले में पड़ जाने वाला फंदा है । एक बार इस फंदे में फँस जाने के बाद फिर कितनी पीढ़ियाँ आप की इन अन्धे कुँऐं अथवा गद्धियों को मत्थे टेकने में ही केवल डूब जायेंगी, इस का जवाब आपको किसी ऋषि से भी मिलना असंभव ही है निश्चित रूप से । लेकिन आप की श्रद्धा से इन डूबने वालों की गिनती का अवश्य अन्दाजा लगाया ही जा सकता है निश्चित रूप से । एक्सीडेंट अथवा दुर्घटना से बचने के लिये सड़क पर आँख खोल कर चलना आवश्यक है केवल अपनी ज़िन्दगी को सुरक्षित रखने के लिये । उसी तरह से मानव जन्म को भी सफल अथवा सार्थक बनाने के लिये सृष्टि के नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है । इसलिये यहाँ भी आँख खोलिये अपनी दुर्लभ बुद्धि की तथा पहले से विचार कर लीजिये, कहीं ऐसा न हो कि अंत तक केवल जुर्माना ही इकट्ठा करते रहें और फिर कहीं अन्नत काल तक अनन्त पिंजरे केवल इस जुर्माने को चुकाने में ही न रोशन करने पर मजबूर होना पड़े ।

लगभग एक सौ पच्चीस वर्ष तक कबीर नाम की एक दुर्लभ आत्मा ने काशी में रह कर के दुनिया को डूबने से बचाने के लिये प्रचार किया । कई बार भूखे रह कर और बदले में दुनिया की जूतियां भुगती-निचली जात में जन्म होने के कारण, और जब शरीर छोड़ने लगे तो काशी को छोड़ मगहर के इलाके में डेरा डाला । ठगों (ब्राह्मणों) ने प्रचारित कर रखा था कि जो काशी में प्राण त्यागेगा उसे भगवान शिव अपने धाम ले जायेगें और जो मगहर में मरेगा उसे दोजख अथवा नर्क में जाना पड़ेगा अवश्य । इस प्रचार को सच मान कर लोग मगहर के इलाके के नजदीक से भी निकलना कभी पसन्द ही न करते थे सुपने में भी । यात्री लोग भी हर हाल में दिन-2 में उस इलाके को पार कर जाते थे कभी भूले से भी रात वहाँ इस इलाके में काटना पसन्द ही न करते थे । दूसरा कारण इस इलाके में पानी का भी अभाव था । कबीर जी ने सोचा कि यहीं काशी में प्राण त्यागे, तो ठगों की ही मौज होगी । कहेंगे कि देखो काशी में मरा इस लिये बच गया, कहीं और मरता तो अवश्य नर्कों में ही जाता उल्टे प्रचार के कारण । यह सोच कि सच को कैसे प्रत्यक्ष किया जाये कि जीव का कल्याण जीते जी का कमाया हुआ उसका अपना व्यवहार ही है । मरने के बाद केवल वही उसे उपलब्ध होता है इंटरेस्ट के साथ

जिसे वह सारी उम्र इकट्ठा करता आया है निश्चित रूप से । "नानक अगे सो मिले जि खटे घाले देई ।" कबीर जी की जुबान से भी केवल वही ताकत बोलती थी जो नानक नाम के शरीर से बोलती थी ऐसा निश्चित रूप से जान लो । मगहर में शरीर छोड़ने के ही कारण वो इलाका बाद में हरियाली में बदल गया और लोग वहाँ बसने लगे । इन दोनों आत्माओं (नानक तथा कबीर) ने आखिरी समय शरीर के पाँचों तत्वों को वहीं अपने मूल में विखंडित कर के मिला दिया । किसी को कुछ भी अवशेष न प्राप्त हुआ । जो इस की साक्षी देता है कि वे इस "विशेष जाल सूक्ष्म" को हर समय काटने में पूर्ण समर्थ थे, उनके आँख मूंदते ही झगड़ा शुरू हो गया कि दफनाया जाये या अग्नि भेंट किया जाये । ये नतीजा निकला इन दुर्लभ आत्माओं के जिन्दगी भर के किये गये "शुद्ध रूहानी प्रचार अथवा ज्ञान" का । फिर आज उनके भक्त आप को कहाँ कभी सुपने में भी मिल सकते हैं भूले से भी । जो रूहानी ज्ञान का केवल एक अक्षर भी नही जानते । सब बाजा बजाने ढोल पीटने में लगे हैं अपने दुर्लभ मानव जन्म को खोने के वास्ते । जो दाढ़ी-चोले दिख रहे हैं चमकते लाली टपकते । लगभग सभी सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों की ही भक्ति कर रहे हैं । केवल इन्हें ही प्रसन्न कर रहे हैं अथवा इनके मुल्क को रोशन करने का ही सामान इकट्ठा

कर रहे हैं अथवा बाँध रहे हैं, और आप सभी केवल इनके इस निकृष्ट श्रेणी के उत्कृष्ट कार्य में ही योगदान करते हुए अपने को श्रेष्ठ स्थापित करते हुए अपना "कीमती दुर्लभ-मानव जन्म" व्यर्थ खोते चल जा रहे हैं ।

आज जो सन्तमत-नाम का दावा कर रहे हैं मत-धर्मो के ठेकेदार, वहाँ भी यही "दुर्लभ विशेष ज्ञान" ही केवल उपलब्ध है । दस-बीस बार शक्ल देखो-लेट कर मत्था टेको, बस दुर्लभ विशेष नाम आप को दान कर दिया जाता है । बस अब कुछ करने की जरूरत ही नहीं अगर फिर भी कुछ कमी समझो तो आखिरी समय वहीं इन विशेष मुर्दो-शक्लों अथवा कब्रों के नजदीक डेरा डाल दो । इनका यही सचखण्ड है ! बस कोई प्यारी सी चमकती हुई शक्ल-कब्र अथवा मुर्दा विशेष-2 आयेगी और आप को सीधे सचखण्ड दुर्लभ विशेष परमात्मा के चरणों तक पहुँचा देगी । रास्ते में बेचारी ये "शक्ल अथवा कब्र चलती-फिरती विशेष" कुछ दम भी न लेगी । ये है इनकी सन्तमत । क्या नतीजा निकलेगा इस पाखण्ड का । आप केवल इनका अंग अथवा हिस्सा बन कर के केवल अपनी "भयानक आत्मिक मौत" मरने का ही केवल सामान बाँध रहे हो अथवा इकट्ठा कर रहे हो निश्चित रूप से आप अभी गाँठ बाँध लो । ऐसे दुर्लभ ज्ञान अथवा मुक्ति को बांटने वाले दुर्लभ परमात्माओं अथवा खूनी लोभी भेड़ियों से

सावधान हो जाओ अभी से तुरन्त आवश्यक रूप में अगर बचना चाहते हो तो । कोई जेरूसलम में परमात्मा को कैद किये बैठा है तो कोई काबा में ! "सतर काबा घट ही भीतर जे मन जानै कोई ।" कोई हज में मुक्ति समझ रहा है तो कोई तीर्थों में । कोई पढ़ने में लगा है और उसे किताब में ही कैद कर के चूम चाट रहा है । तो कोई मूर्ति बनाकर उसी में उसे कैद कर भोग लगाने में अपने को श्रेष्ठ स्थापित कर रहा है । "बेद-कतेबां पढ़-पढ़ थके - सजदे करदियां घस गये मत्थे । न रब तीरथ न रब मक्के - जिस पाया तिस "नूर" अनवार ।" इस दुर्लभ परम चेतन सत्ता को तू निरन्तर अपने साथ लिये फिरता है विद्वान प्राणी (महामूर्ख श्रेणी के) जब "टोयलेट" विशेष में जाता है तो ये बाहर नहीं बैठ अथवा रूक जाता और तेरा इन्तजार करता है कि कब तू निपट कर के आये और फिर ये तेरे पर सवार हो जाये । अथवा किसी विशेष-2 स्थान अथवा आसन लगाने पर ही केवल प्रत्यक्ष नहीं होता केवल । हम दावे से कहते हैं कि इस की सब से प्यारी-2 तथा विशेष जगह प्रत्यक्ष होने की ये "टायलेट" की सुन्दर-2 प्यारी-2 चमकती हुई सीट ही है । अतः तुझे सावधान करते हैं कि इसे अवश्य बड़े प्यार से "धूप बती" दिया कर । अगर इसे पसन्द ही यही सीट आती है तो भाई इस बीमारी का उस महामारी विशेष का तेरे पास इलाज ही क्या है ? उस के आगे किसी का कोई जोर नहीं । उस की रजा में राजी रहने में ही जीव का केवल कल्याण है ।

प्रभु प्रेरित वाक्यों से स्पष्ट ही है कि "अन्तकाल" का भाव केवल दुर्लभ मनुष्य का जन्म ही है । "लख चउरासीह जोन सबाई - माणस कउ प्रभ दी वडियाई। इस पउड़ी ते जो नर चूके - आई जाई दुख पाईदा ।" इस दुर्लभ अवसर में की गई तेरी थोड़ी सी भी गल्ती तुझे अनन्त दुखों का भण्डार खरीदने पर अवश्य विवश कर ही देगी निश्चित रूप से । "स्त्री सिमरै" यानी के जो आत्मायें इस दुर्लभ मानव जन्म में आ चुकी हैं, यदि जिन्दगी भर "काम विशेष" के चिन्तन अथवा व्यवहार में अपने उपलब्ध इस दुर्लभ अवसर को व्यतीत करती हुई रोज हर पल आत्मिक मौत मरती ही रहती हैं तो इसका निश्चित नतीजा "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" के दरबार में उसे निश्चित उपाधि "वेश्या" नाम के मैडल से सुशोभित कर के पहले निकृष्ट घोर पार्कों की सैर करवाई जाती है, आवश्यक सम्मान के रूप में फिर उसे वहाँ से विद इंटरेस्ट के साथ निकृष्ट कामी भोगी जूनों में भेज दिया जाता है । और फिर जब वो आत्मा इस लम्बे सफर के बाद इस दुर्लभ मानुख जन्म को प्राप्त करती है तो इसी दुर्लभ आत्मा को अपनी निजी कमाई से प्राप्त ये विशेष उपाधि अर्थात "वेश्या" नाम का पेशा प्रत्यक्ष होता है और उसे न चाहते हुए भी इस निकृष्ट धन्धे को आवश्यक रूप से मिली विशेष उपाधि के कारण ही केवल अपनाने पर मजबूर होना ही पढ़ता है । वेश्या लफज का भाव है अपने को पराये वश करना । स्वाद के कारण अथवा

मजबूरी में । जो आत्मा दो आत्माओं से सम्बन्ध रखती है उसके विघ्नों को आप उनसे ही पूछो तो ज्यादा बेहतर है । शाति केवल एक से ही उपलब्ध होनी सम्भव है । दो का नाम केवल अशाति अथवा क्लेश ही है निश्चित रूप से । फिर दो से अधिक को व्यक्त करने का तो कोई लफज ही नहीं है, जो इन से पैदा होने वाले दुर्लभ वातावरण को व्यक्त करने में समर्थ हो सके कभी सुपने में भी । आप दो को कभी किसी भी काल में संतुष्ट अथवा प्रसन्न करने में सफल हो ही नही सकते । अवश्य कुछ न कुछ अभाव आवश्यक रूप से रह ही जायेगा निश्चित रूप से । फिर अधिक को कैसे किस लफज से ब्यान किया जाये । इसीलिये परमार्थ में केवल "एक" पर भरोसा करना सिखाया जाता है । यानी के तेरा असली खसम केवल अकाल पुरख परमात्मा है । तू केवल उसी का अंश है और वो हर काल में निरन्तर सर्व-कला सम्पन्न अथवा समर्थ ही है केवल । उस का भरोसा न रख कर जो आत्मायें और-2 नकली तथा झूठे बने परमात्माओं पर भरोसा करती हैं, उन पर अपनी हस्ती लुटाती हैं । उन्हें केवल रंडी अथवा वेश्या श्रेणी की आत्माओं में गिना जाता है उस अकाल पुरख परमात्मा के दरबार में । तथा स्पष्ट ताकिद की जाती है कि इन रंडी श्रेणी की आत्माओं के नकली मीठे "संग" से भी सच्चे परमार्थी को अवश्य आवश्यक रूप से अपने को सुरक्षित रखने के लिये दूर रहना ही केवल श्रेयस्कर है । और दूसरा जो कोई भी इस दुर्लभ अवसर

को प्राप्त आत्मा को, असल परमात्मा से दूर रहना सिखाये अथवा अपने को परमात्मा स्थापित करे ऐसे "निकृष्ट कंजर" से भी आप को दूर रहना ही श्रेयस्कर है । केवल आप की सुविधा अथवा अच्छी सेहत के वास्ते ये "कंजर नाम का निकृष्ट कीड़ा" केवल आप का दुर्लभ मानव जन्म ही खाने का धन्धा करता है सूक्ष्म रूप से । पता तब चलता है जब आप सब कुछ लुटा चुके होते हैं । ऐसी "रंडियों" का क्या बनेगा जिन्होंने इस लोक में तो दस खसम बना रखे हैं और परलोक के लिये किसी बड़ी-2 दाड़ी वाले को ब्याना अथवा एडवांस यानी के अग्रिम दे रखा है निश्चित रूप से, अपने को इसी धन्धे अथवा पेशे में बनाये रखने के लिये । जो "कंजर विशेष" इस मुल्क में ही समर्थ नहीं है कुछ कर सकने में, वो परलोक में तुझे कैसे संतुष्ट कर लेगा "रंडी ।" और जो खसम तेरे परलोक में कुछ नहीं कर सकते, वो कैसे तुझे इस मुल्क में भी प्रसन्न अथवा संतुष्ट रखने में कभी सुपने में भी समर्थ हो सकेगें, हे दुर्लभ प्यारी रस से भरी गुड़ से भी मीठी हसीन श्रेणी की "रंडी !" केवल एक अकाल पुरख परमात्मा के सिवाय और किसी को भी अपना प्रेमी बनाने अथवा मानने या ध्यान करने वाली "रंडी श्रेणी" की आत्माओं के संग से भी दूर रहना ही सच्चे परमार्थी का केवल उसका अपना निजी लाभ ही है निश्चित रूप से । "सूहे वेस कामण कुलखणी - जो प्रभ छोड पर पुरख धरे पिआर । ओस सील न संजम - सदा झूठ बोलै - मनमुख करम खुआर ।" प्रभु

प्रेरणा इस वचन से स्पष्ट ही है ऐसी आत्माओं के मत-धर्म विशेष की अपनाई हुई क्रियाओं का श्रृंगार रखने वाली रंडी श्रेणी की आत्मायें अपने अविनाशी कुल को भूल कर के केवल कुल तथा वंश को दाग लगाने वाला कार्य को सिद्ध करती हैं । इसीलिये इन रंडियों को प्रभु के दरबार में कुलखणी कहा जाता है । कैसा गुण रूपी श्रृंगार इन रंडियों ने अपना रखा है ? सूहे वेष, यानी के बाहर से तो गुरमुख-सतसंग-परमार्थी इत्यादि बनी फिरती हैं, पर अन्दर से चुपके-2 "पर पुरख" अर्थात दूसरे नकली बने परमात्माओं अथवा कंजरो का संग करना पसन्द करती हैं । उन के "ध्यान" में ही अपने को मिटाती हुई चालाक समझती हैं । कामण का भाव है आकर्षित करना । ये कैसे आकर्षित करती हैं रंडिया दूसरी आत्माओं को ? बाहरी परोपकारी लफज को सार्थक बनाने वाली क्रियाओं से-विशेष रूप से सेवा नाम के दुर्लभ भण्डार का हिस्सा बन कर के ! इन रंडियों का सील तथा संजम सदा गुप्त ही रहता है यानी के अन्दर इनके विशय वासनाओं के अथाह समुद्र निरन्तर ठांठा मारते ही रहते हैं । अर्थात रहत मर्यादा से दूर-2 तक इन रंडियों का कोई दूर का भी रिश्ता होना अथवा बनना सम्भव ही नहीं होता कभी सुपने में भी । "सदा झूठ बोले" अर्थात इन रंडियों की माँग निरन्तर बढ़ती ही रहती हैं । "झूठ" लफज का भाव केवल कुल आलम के वस्तु-पदार्थ-तथा सम्बन्ध ही हैं । ये रंडिया आप का "दर्शन" केवल इन वासनाओं को पूरा करवाने के वास्ते

ही करना पसन्द करेगी ! "मनमुख" यानी के मन अर्थात "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकत" केवल को मुख यानी के सामने रख कर अथवा करने के लिये ये समस्त दुर्लभ रंडिया "रंडी" नाम के पेशों को अपना कर के दुर्लभ श्रेणी की पेशेवर रंडी अथवा वेश्या कहलाती हैं । "खुआर" यानी के ऐसी रंडियों को बार-2 निकृष्ट कामी योनियों में जन्मने तथा मरने के दुखों को बर्दाश्त करने के लिये ही केवल अनन्त काल तक के वास्ते मजबूर होना ही पड़ता है अवश्य आवश्यक रूप से ऐसा निश्चित समझो । इसी तरह से प्रभु प्रेरणा स्पष्ट है कि मानुख जन्म जो दुर्लभ तथा कीमती है । यह प्रभु की केवल विशेष दया से ही उपलब्ध होना सम्भव है । इस दुर्लभ दया को प्राप्त कर जब कोई आत्मा इसका दुरूपयोग करती है अर्थात इसका खर्च केवल विशय वासनाओं को पूरा करने में ही अपने को श्रेष्ठ स्थापित करती है, तो इसका बदला उसे अनन्त दुखों को भुगतने पर मजबूर हो कर के चुकाना ही पड़ता है निश्चित रूप से । ये तो केवल ऐसा ही है कि जैसे किसी ने स्वंय ही दुखों की पोटली अपने सिर का श्रृंगार अथवा ताज समझ कर के पहन अथवा धर ली हो । अपने ही हाथों से केवल अपने सिर पर ! इस वचन में केवल इशारे के रूप में ही केवल एक-2 मिसाल दे कर ही प्रभु बता रहे हैं कि जो कोई आत्मा भी इस मनुष्य जीवन में धन-पदार्थो को एकत्र करने में इस दुर्लभ विशेष पूँजी को खर्च करता है तो उसे अवश्य सर्प जून में भी

आवश्यक रूप से इस निकृष्ट पिंजरे को भी बार-2 रोशन करने के लिये मजबूर होना ही पड़ता है । जो आत्मा मनुष्य जीवन में सम्बन्धों पर कुर्बान होती रहती हैं विशेष रूप से पुत्र अथवा लड़के की मिसाल दे कर प्रभु समझाते हैं कि उसे अवश्य आवश्यक रूप से निकृष्ट योनी अथवा सुअर नाम के पिंजरे को भी रोशन करने पर मजबूर होना ही पड़ता है लम्बे समय तक । फिर बताते हैं कि जो आत्मा इस दुर्लभ मौके अथवा अवसर को महल-माड़ियों को ही प्रत्यक्ष अथवा स्थिर रखने पर ही केवल अपनी हस्ती मिटाती रहती हैं तो उन्हें अवश्य प्रेत नाम की निकृष्ट योनी अथवा पिंजरे को भी रोशन करने के लिये युगों-युग तक अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से आवश्यकता अनुसार ! आखिरी वचन में प्रभु स्पष्ट करते हैं कि अगर तू निश्चित रूप में अपना कल्याण चाहता है, तो प्राप्त हुऐ इस "दुर्लभ अवसर" को तू केवल एक अकाल पुरख परमात्मा अर्थात नारायण पर ही खर्च करने में अपने को श्रेष्ठ समझ । केवल उस एक को निर्मल-पाक अथवा पवित्र हृदय से निरन्तर पुकारने में ही केवल तेरा स्वंय का ही निश्चित रूप से कल्याण निहित है । कुल आलम में उस परम चेतन सत्ता के सिवाय न तो कुछ और ही है और न कोई कभी सुपने में भी तेरी मदद करने को समर्थ हो ही सकता है । ऐसा तू निश्चित रूप से अभी तुरन्त गाँठ बाँध ले । अभी तो "चोर शोर मचा" रहा है नपुंसक की जून के लिये । ऐसे दुर्लभ चोर विशेष का क्या होगा

जिसे प्रभु दरबार से चार और उत्कृष्ट मैडल-सर्प-सूकर-प्रेत तथा रंडी के एडवांस में पार्सल कर के भेज दिये गये हैं निश्चित रूप से । मुबारक हो तुझे तेरी ये महान-2 उत्कृष्ट विशेष-2 उपाधियाँ । युगों युग इनका सुन्दर से सुन्दर ढंग से बड़ी सावधानी विशेष से इनका स्वंय भी उपभोग कर तथा अपने प्यारे-2 अनुयाईयों मित्र-सम्बन्धियों को भी अपने इन विशेष-2 समारोहों में अवश्य आवश्यक रूप से शामिल होने का निमंत्रण देना कभी सुपने में भी भूल मत जाना । इन्हीं की "कृपा विशेष अथवा दया" से ही तो तू इन महान-2 उपलब्धियों को प्रत्यक्ष करने में समर्थ हो सका है बहुत थोड़े से ही समय में । इन प्यारों अथवा सम्बन्धियों का तेरे पर बहुत उपकार है ! कोई भी सम्मानित परिवार अथवा खानदान अपने प्रति किये गये किसी दूसरों के उपकारों को भूलने की गल्ती कभी सुपने में भी नहीं करता । ऐसा करने से कुल को धब्बा लगता है अथवा शान विशेष में अवश्य कमी आ ही जाती है । हमें पूरी उम्मीद है कि तू अवश्य ऐसी भूल कभी सुपने में भी करने में समर्थ न हो सकेगा । अर्थात तू अवश्य इन "विशेष-2 रंडियों" को अपनी निकलने वाली बारात की शोभा अथवा शान बढ़ाने के लिये अवश्य आवश्यक रूप से शामिल करेगा ही । इतना सा भरोसा तो हम तुझ पर तेरे खानदान का पुश्तैनी धन्धा देख कर के रख ही सकते हैं । उम्मीद है कि तू अवश्य हमारी उम्मीदों पर पानी की केवल एक बूँद भी पड़ने ही न देगा निश्चित रूप से

। ऐसा हम यकीनी तौर पर कह ही सकते हैं । देखियो किसी के कहे का कुछ बुरा मत मानियो हज्म कर लियो । क्योंकि हम जानते हैं कि तेरा "हाजमा विशेष" काफी "दुर्लभ" ही है । ये तो हज्म करने का तेरा पुश्तैनी पेशा ही है । भला इस कार्य में दूसरा और कौन है जो तेरे स्पर्धा भी रख सके । अर्थात तू अकेला ही सूरमा निश्चित रूप से साबित होगा, इस दुर्लभ धन्धे विशेष में ऐसा तुझ पर पूरा भरोसा ही है । ऐसी "दुर्लभ हसीन-2 रंडियों" से भरी "कंजर" की बारात के संग से भी अपने को बचाना आप का केवल अपना निजी कल्याण अथवा व्यवसाय मात्र ही है, जो आप की अच्छी सेहत के लिये आवश्यक एक दुर्लभ विटामिनों से लबालब भरा "पौष्टिक आहार" ही है । ऐसा आप निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो अपने को "तगड़ा अथवा बलवान" बनाने के लिये । भाई ये नुस्खा आप किसी और के कान में मत फूंक दीजियेगा कहीं । भेद खुल जाने से सारा मामला ही चौपट हो जायेगा, कैसे बारात निकलेगी अथवा सजेगी बेचारे "दुर्लभ कंजर" विशेष की बिना रंडियो विशेष-2 के ? जरा सोच तो सही । फिर भाई इन बाजे वालों का क्या बनेगा ? कैसे चलेगी इनकी गुजर । बच्चे भूखे मरने लगेंगे बेचारों के । भाई हमें तो बहुत डर लगता है किसी के पेट पर लात मारते हुये । इतनी बद्दुआओं का बोझा कब कौन किस तरह से परिवार कुल सम्बन्धों सहित उठाने में भी समर्थ हो सकता है कभी सुपने में भी ? "आत्मा" "परमात्मा" का

"दुर्लभ विशेष अंश" है निश्चित रूप से। प्रत्येक काल में यह "अंश विशेष" अपने "मूल विशेष" से निरन्तर जुड़ा हुआ रहता है निश्चित रूप से। इसी कारण इस "अंश विशेष" में किसी भी तरह की कुछ भी कमी अथवा बढ़ोतरी अनेक अकथ प्रयत्नों के बावजूद प्रत्यक्ष करनी केवल "असंभव" लफज को ही सार्थक बनाना है निश्चित रूप से। फिर कैसे मान लिया जाये कि किसी भी "विशेष की मुहर" लगाने के बाद ही "प्रभु" आप से बात करेंगे या आप "प्रभु" तक पहुँच सकोगे। यह सब केवल ठगी का ही एक विशेष ढंग मात्र है निश्चित रूप से। "प्रभु" ने किसी भी "दलाल विशेष" को इस "निकृष्ट कार्य" के लिये "निर्धारित" नहीं किया है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो। कमी आप में ही है कि आप बिना विचारे इन दलालों विशेषो के पीछे भागने लगते हो। सब कुछ स्पष्ट रूप से आप को लिख कर के दे दिया गया है। आप के पास पढ़ने तक का ही समय नहीं है फिर विचार कैसा तथा व्यवहार का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। बिना कुछ भी "पुरुषार्थ विशेष" किये आप "केवल स्वर्ग" मांगते हो (परमात्मा का भी केवल मुखौटा ही लगा रखा है चाहिये केवल "भोग विशेष" ही निश्चित रूप से) "सूली" आप भुगत लो हमें "केवल स्वर्ग" लिख दो। एक ही बार में दुबारा आना ही न पड़े समय निकालना असम्भव ही है निश्चित रूप से। फिर कोई दूसरा आप की इस "दुर्लभ कमजोरी विशेष" का फायदा उठाये तो इसमें कोई हैरानी का तो विशय ही

नहीं है निश्चित रूप से । दोश केवल अपना स्वंय का ही पैदा किया हुआ है यकीनी तौर पर । "सभ कुछ घर मह बाहर नाही । बाहर टोलै सो भ्रम भुलाई ।" "घर" यानी के शरीर में शुरू से ले कर के अंत तक का "समस्त व्यवहार" प्रत्यक्ष उपलब्ध है "अखुट भण्डार" के रूप में निश्चित रूप से फिर "मनमुख मुग्ध बूझे नाही-बाहर भालण जाई ।" ये तेरी स्वंय की ही "अज्ञानता अथवा भ्रम विशेष" ही है कि तू "प्रभु" की तलाश बाहर के विशेष-2 स्थानों अथवा "दलालों विशेष-2" के जरिये करने में ही केवल स्वंय को श्रेष्ठ समझता है निश्चित रूप से, इन विशेष-2 ढंगों से तेरा कार्य विशेष "प्रभु मिलन" का भला कैसे सम्पन्न होना सम्भव हो सकता है कभी सुपने में भी। केवल असम्भव लफज को ही चरितार्थ बनाना है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । फिर "दलाल" भी आपने किसे बना रखा है जो स्वंय "ताली विशेष" पीटने अथवा नाचने कूदने में ही व्यस्त है अर्थात जो स्वंय परमार्थ का एक लफज तक नहीं जानता फिर तुझे कहाँ से कैसे "डिग्री विशेष" प्रत्यक्ष अथवा उपलब्ध करवाने में समर्थ हो सकेगा ? फिर यहाँ तो "जीते जी मरने" का विधान विशेष है निश्चित रूप से "जीवित मरिऐ भवजल तरिऐ ।" मरना जीते जी केवल तुझे "स्वंय" को ही है निश्चित रूप से । और तू दूसरों से आस लगाये बैठा है । केवल शक्लें देख कर के ही मुक्त हो जाना चाहता है । एक महान विशेष ने दूसरे महान विशेष से पूछा कि तुम नें आज

तक क्या सुना है ? दूसरे महान विशेष ने जवाब दिया कि यहाँ सुनने भला कौन आता है, हम तो केवल "हज़ूर" के दर्शन करने आते हैं । अब समय बदला, यही जनाब विशेष "महान विशेष" बना दिये जाते हैं ! अब आप स्वंय विचार कर सकते हो कि इन "महान विशेष" से आप जीते जी मरने का कौन सा ढंग कैसे सीख लोगे । केवल शक्लों को दिखाने में ही मुक्ति बटेगी अब तो निश्चित रूप से, फिर नतीजा घोर-2 नरकों का कैसे बदल जायेगा निश्चित रूप से । आप को ज्यादातर परमात्मा बने "दलाल" विशेष-2 ऐसे ही मिलेंगे, जिन विशेष का "ट्रेनिंग पीरियड" परमात्मा बनने का केवल दो-चार महीने अथवा बड़ी छलांग लगाई तो दो वर्ष रहा निश्चित रूप से । बस यही ढंग सिखाया जाता है कि सज कर बैठो और मुक्ति बाँटो ! किसी के नाम कार कर दो और फिर उससे "पार्किंग" की तमीज चाहो तो ये "शंका" प्रत्येक काल में बनी रहेगी निश्चित रूप से अवश्य आवश्यक रूप से ! "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" भरपूर कार्य करती हैं इन नकली परमात्माओं में निश्चित रूप से । मुँह से लफज निकला नहीं नकली परमात्माओं के, कि चरितार्थ करने में देर नहीं लगाती ये चालाक "शैतानी ताकतें" फिर आप बैठ कर के नहीं पूरे दण्डवत हो कर के केवल मत्था ही नहीं, नाक भी घिसाते हो निश्चित रूप से इन नकली परमात्माओं के आगे । इसी तरह से

पीढ़ी दर पीढ़ी ये परम्परा केवल डूबने का ही धन्धा बन चुकी है निश्चित रूप से ।

"दलाल अथवा कंजर विशेष" का कार्य होता है अपनी अहमियत को स्थापित करना, कि यदि मैं यानी के दलाल विशेष नहीं होऊँगा तो आप को विशेष सौदा अथवा पदार्थ उपलब्ध होना केवल असंभव ही होगा या जोखिम विशेष-2 होगा निश्चित रूप से । मैं अथवा दलाल विशेष तुम्हें विशेष-2 सुविधायें उपलब्ध करवाऊँगा । तुम्हें कुछ भी फिक्र इत्यादि करने की आवश्यकता ही नहीं है "मैं हूँ ना" दलाल विशेष ! यहाँ तक कि मैं अथवा दलाल विशेष तुम्हारे मरने का इंतजार करूँगा और फिर आप के प्राण निकलते ही मैं अथवा दलाल विशेष भूत विशेष की तरह से प्रत्यक्ष हो जाँऊगा और आप को ले जा कर के सीधा "विशेष" सचखण्ड पहुँचा ही दूँगा बिना रूकावट । मेरी अथवा दलाल विशेष की चलती है सभी मण्डलों में-मैं अथवा दलाल विशेष ही परमात्मा विशेष हूँ आपको कुछ भी करने अथवा फिक्र करने की जरूरत ही नहीं है निश्चित रूप से । कई पीढ़ियों से हम यही कार्य विशेष समपन्न करते आ रहे हैं निश्चित रूप से । आप के पूर्वजों को भी हमी (हम) ने मुक्त करवाया है, कोई एक भी मिला है मरने वाला आप को जो कहे कि हमारी उपलब्ध करवायी गई सुविधा विशेष में कुछ कमी है । हम ने वहाँ विशेष तौर पर अपने मत-धर्म के नाम की "कालोनी विशेष" बना रखी है, जहाँ आप की सभी

"कामनाओं" विशेष-2 की अवश्य आवश्यक रूप से पूर्ति होती रहेगी विशेष-2 साधनों सहित निश्चित रूप से अनन्त काल तक के लिये ! निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो कि ये "कालोनी विशेष" आप को केवल "घोर-2 नर्कों" विशेष में ही उपलब्ध होगी यकीनी तौर पर अवश्य आवश्यक रूप से । अनन्त काल तक के लिये "भयानक दुख" सहने का ही केवल सामान बाँध रहे हो (ऐसे ही निकृष्ट कार्यों को करते हुऐ) स्वंय के गले में अपने ही हाथों के द्वारा निश्चित रूप से । जो स्वंय को परमात्मा स्थापित करें अपना ध्यान करवायें अर्थात अपनी एहमियत निश्चित करें यकीनी तौर पर "कंजर विशेष" कहलाने का ही केवल अधिकारी है निश्चित रूप से । तथा जो "आत्मा विशेष" अपने "असली खसम अर्थात प्रभु" को भुला करके इन नकली बने हुऐ परमात्माओं को एहमियत दे-ध्यान करे-पूजा इत्यादि कार्यो विशेष में ही अपनी हस्ती मनुष्य के दुर्लभ जन्म विशेष को खर्च करे अथवा मिटाये केवल "रंडी विशेष" कहलाने की ही अधिकारी है ऐसी निकृष्ट आत्मा विशेष निश्चित रूप से । पूरा "देव जगत" केवल "कंजर" लफज को ही सार्थक बनाने में समर्थ है निश्चित रूप से । यह "देव जगत" केवल "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों" का ही "मीठा सा भ्रम विशेष" पैदा करने वाला "दुर्लभ विशेष स्वरूप" है निश्चित रूप से । जो केवल "रंडियों विशेष" की ही तलाश में रहता है निरन्तर यकीनी तौर पर गाँठ बाँध लो ! एक बार इन "कंजरो विशेष-2 पातशाहों" के चुंगल में फंसने के बाद आप की अनन्त

पीढ़ियाँ कुल-परिवार सम्बन्धियों सहित कब भेंट चढ़ जायेंगी, अनन्त काल तक के लिये आप को कभी सुपने में भी इस का एहसास हो ही नहीं सकेगा निश्चित रूप से। अर्थात फिर चाह कर के भी आप इनके "मीठे से भयानक जाल विशेष" में से कभी सुपने में भी मुक्त करवाने में स्वयं को केवल असमर्थ ही अनुभव करोगे निश्चित रूप से। इनकी असलियत जानने के बाद ही केवल आपको अनुभव होगा कि ये "कंजर लफज" तो बहुत छोटा सा है इन की "करतूतों विशेष" के सामने निश्चित रूप से। आप के कीमती दुर्लभ "मार्ग विशेष" में सब से "बड़ा विघ्न" केवल यही "सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें" अथवा "देव जगत" ही है निश्चित रूप से गाँठ बाँध लो। आप के सभी प्यारे-2 रूप विशेषों में भी केवल यही "शैतानी ताकतें" ही छुपी हुई बैठी हैं निश्चित रूप से, जिन के ध्यान करने में ही आप मग्न हो यकीनी तौर पर। आपका "असली खसम" केवल वही है जिसने सब कुछ प्रत्यक्ष कर के निरंतर धारण कर रखा है निश्चित रूप से यानी के केवल "परम चेतन सत्ता।" केवल वही "परम चेतन सत्ता" ही ध्यान अथवा पूजा के योग्य है प्रत्येक "आत्मा विशेष" के लिये निश्चित रूप से प्रत्येक काल में। इसलिये "कंजरो तथा रंडियों विशेष" से "सच्चे परमार्थी" को अवश्य आवश्यक रूप से सावधान रहना ही केवल श्रेयस्कर है निश्चित रूप से। केवल "स्वयं" के ही "निज कल्याण" हेतू प्रत्येक आत्मा विशेष के लिये यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में आवश्यकता अनुसार स्वाभाविक रूप से।